सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

राम अब ऐसा वर मैं पाऊं,
दया दान दो परम देव जी
वरद दृष्टि पसारो।
देव-द्वार का भिखारी सदा मैं
दासानुदास कहाऊं ॥1॥
ध्रुव धारणा धारूं कर्म में,
आशा एक भरोसा।
अचल-चूल वत् निश्चल निश्चय,
परा प्रीति उर लाऊं ॥2॥
एक भक्ति दो भगवन्! तेरी,
दूसरा देव न देखूं।
राम नाम में लगन लगा कर,
दुविधा दूर भगाऊं ॥3॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

मूल्य (Price) ₹ 5

परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के अवतरण दिवस पर लख लख बधाई !

Happy Ram Nawami & also
congratulation on Pujyapad
Swami Ji's happy birth-day.
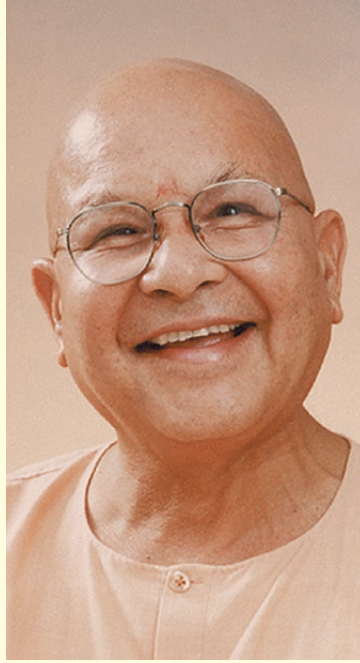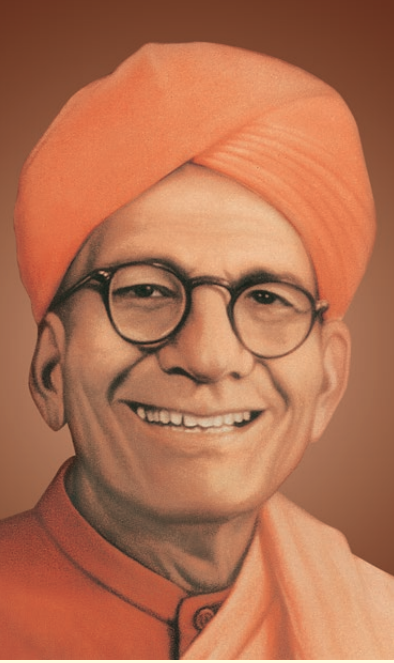
अतिशय प्रिय परम गुरु।

मिले जो तुम तो मिला प्यारे, हमें सरल पथ परम धाम का,
जीवन रण, नंगे पग जीता, शरणागत बन, राम नाम का।।

ये सब तुम्हारी कृपा है सत्गुरु, कि अभी संगत जमी हुई है।
सुमन सभी हैं भक्ति सुवासित, सुरति ज्योति उर लगी हुई है।।

जहाँ भी देखूँ, जिधर भी देखूँ, तुम्हारी छवि ही पड़े दिखाई।
यहाँ के कण कण में प्यारे अब तक, तुम्हारी खुशबू बसी हुई है।।

जो आँख मूंदूँ तो यूं लगे, ज्यों तू पास में ही खड़ा हुआ है।
धरा से अम्बर तलक फ़िज़ा ये, तेरे ही रंग में रंगी हुई है।।

सजल हमारे नयन मगर तू, मधुर मधुर मुस्कुरा रहा है।
तव स्वरुप की दिव्य ज्योति से, सारी संगत दमक रही है।।

हमें यकीं है, यहीं मिलेगी, वो प्रीति जिसकी हमें जरुरत,
बसाई हमने इसीलिए तो हृदय में, प्यारे तुम्हारी मूरत।

(यह संगीतमय भाव परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज द्वारा दीक्षित, एक वरिष्ठ साधक के हैं। वर्षों के प्रवास के बाद श्री रामशरणम्, दिल्ली में भव्य दर्शन उपरान्त उनके मन से सहसा प्रकट उद्‌गार)

परम पूजनीय श्री महाराज जी के अवतरण दिवस पर लख लख बधाई !

भक्तिमय कर्मयोगी परम पूजनीय महाराज डॉ. विश्वामित्र जी

परम पूजनीय महाराज का व्यक्तित्व ब्रह्माण्ड जैसा विशाल है और उनकी साधना, आराधना और व्यक्तित्व के बारे लिखना कठिन है। वे आज भी सूक्ष्म रूप से सब साधकों में अन्तरनिहित हैं।

विनम्रता की प्रतिमूर्ति

परम पूजनीय महाराज विनम्रता की प्रतिमूर्ति हैं। स्वयं विनम्रता भी उनके सामने नतमस्तक होकर और अधिक विनम्र हो जाती है। अभिमान एवं अहंकार भी उनके आगे विनम्र हो जाता है। निराभिमानता (अर्थात मुझे कोई अभिमान नहीं है) का अभिमान भी उनकी विनम्रता के आगे नत–मस्तक होकर विनम्र हो जाता है।

गुरू में पूर्ण आस्था

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज एवं श्री प्रेम जी महाराज के श्रीचरणों में पूर्ण आस्था रखते हुये उनकी उपस्थिति प्रत्येक क्षण अपने समीप रखते हुये पूज्य महाराज जी साधना में रत रहते थे। अपनी भावपूर्ण वाणी से उन्होंने प्रत्येक साधक के हृदय में यह विश्वास जगा दिया कि, गुरूजन आज भी सूक्ष्म रूप से हमारे साथ विराजमान होकर पग–पग पर हमारी सहायता करते हैं। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के प्रत्येक कथन को वे गुरू आज्ञा मानकर उनको व्यवहार में क्रियान्वित करते थे।

प्रेम, स्नेह और शान्ति की मूर्ति

पूज्य श्री महाराज जी प्रेम, स्नेह एवं शांति की मूर्ति थे। उनका सानिध्य पाते ही साधक आत्मविभोर होकर अपने आप उनके समक्ष नतमस्तक हो जाया करता था। वे सभी से समान रूप से प्रेम और स्नेह करते थे। चाहे साधक वरिष्ठ हो अथवा कनिष्ठ। पूज्य महाराज जी यदि प्रेम और स्नेहवश किसी साधक का स्पर्श करते थे, तो उस साधक के पूर्ण शरीर में विद्युत तरंग उत्पन्न हो जाती थी, जो कि उसके लिये अविस्मरणीय होती थी। ऐसा क्यों होता था? पूज्य महाराज कामना रहित थे। उनकी एक ही कामना थी कि **''मधुर मिलन मिले तेरा राम, मधुर मिलन मिले तेरा''**। अगर कहें कि अहंकारी, अभिमानी उनके स्पर्श से विनम्र, स्नेह की मूर्ति हो जाता था तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आदरणीय साधक निर्दोष जी के भजन

''तन मन जीवन सुलग उठे'' के पद की पंक्तियाँ – पूज्य महाराज जी पर चरितार्थ होती हैं :

'मुझे पर्वत बनना पसंद नहीं,
अभिमान मान हर लो मेरा'
मैं प्रेम नगर का वासी हूँ,
गुण ज्ञान ध्यान हर लो मेरा'

आशा एक रामजी से, दूजी आशा छोड़ दे

पूज्यपाद स्वामी जी महाराज की धुन **''अशरण शरण शांति के धाम, मुझे भरोसा तेरा राम''** पर पूज्य महाराज जी का व्यक्तित्व समाहित था। तृष्णा (अर्थात कभी तृप्त न होना, हमेशा अतृप्त) एक बडा भयंकर, साधक का शत्रु है, पर महाराज जी की साधना देखिये, उन्होंने तृष्णा का रूख मोड़कर उसे राम नाम की ओर कर दिया और राम मिलन की तृष्णा को अपना लिया।

परोपकार हेतु प्रार्थना अर्थात निष्काम प्रार्थना

जिस किसी साधक पर कोई विपत्ति आती, जिसके फलस्वरूप उसका चित्त चंचल हो रहा हो, पूज्य महाराज जी उसके लिये विशेष ध्यान एवं प्रार्थना करते। उनकी आर्त पुकार में इतना बल होता था एवं उस पुकार की तरंगें इतनी प्रबल होती कि उस साधक की विपत्ति पूज्य महाराज जी की निष्काम एवं परोपकार से लिप्त प्रार्थना से दूर हो जाती। इसके अनेक साधक साक्षी हैं। साधकों के भयंकर रोगों आदि को पूज्य महाराज जी ने प्रार्थना के फलस्वरूप निरोग किया है। उनकी प्रार्थना, पूज्यपाद स्वामी जी महाराज की पुस्तिका 'प्रार्थना एवं उसका प्रभाव' पर विशेषतः उसमें वर्णित 'परम विश्वास' (पृष्ठ क्र. 9 से 11) पर आधारित होती थी।

ऐसे भक्तिमय कर्मयोगी पूज्य महाराज जी को शत् शत् नमन !
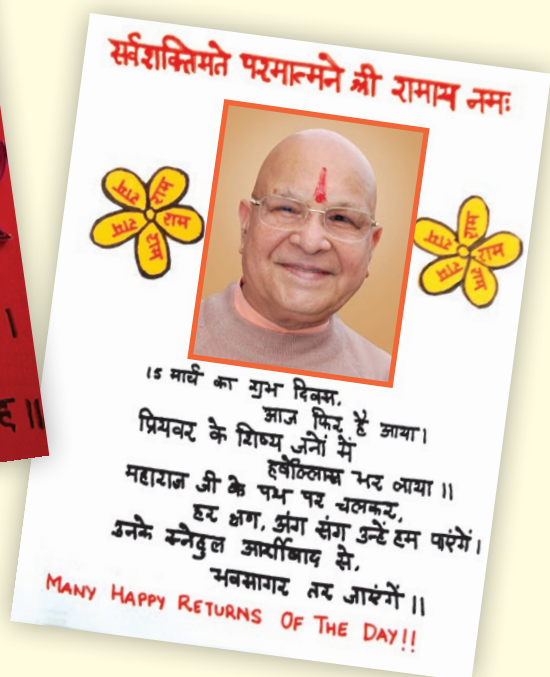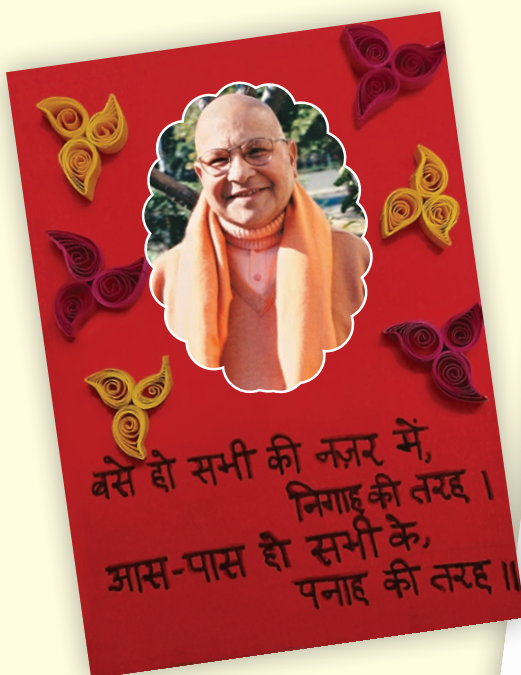
अहंकार साधना में बाधक

एक बार कुछ साधकों के बीच श्री स्वामी जी महाराज विराजमान थे। सम्भवतः उनमें कोई महत्वकांक्षी होंगे। श्री महाराज जी कहने लगे–'लोगों का झगड़ा रहता है कि मैं बड़ा, दूसरा कहता है कि मैं बड़ा। वास्तव में बड़ा कैसे बनता है, यह सुनो – एक बार दाल और बड़ा आपस में झगड़ने लगे। दाल ने कहा कि तू मेरे से ही निकला है, तो मुझसे बड़ा कैसे हो गया? तब बड़े ने कहा–

पहले थे हम उड़द, उड़द से दाल कहाई।
फिर किया गंगा स्नान, त्वचा दी गई उतराई।।

कर पत्थर से युद्ध, अंग-अंग चूर बनाए।
फिर कूदे तप्त कड़ाह में, घाव बरछी के खाए।।

लाल हो निकल बाहर, तब हम बड़े कहाए।।

(यह अंश मूलतः 'प्रवचन पीयूष' पृष्ठ 496 से है।) ■

प्रशंसा सुनने की चाह

हर किसी के हृदय में प्रशंसा सुनने की चाह होती है। कोई तारीफ करे तो हम खुश होते हैं। पूज्य महाराज कहा करते थे कि, जैसे ही आज़ादी मिली पन्द्रह अगस्त को खुशी मनाई जा रही थी, उस समय गांधी जी 'नोआखली' चले गए। महाराज जी कहा करते थे कि कोई मेरे पाँव पर झुके न। इस प्रकार मान देना वे पसन्द नहीं करते थे। एक बार सत्संग में महाराज की प्रशंसा की गई, उनके जन्मदिन पर गीत गाना शुरु कर दिया। महाराज कहने लगे जहाँ अब तक राम गुण गाते रहे, वहाँ पर एक साधारण आदमी की प्रशंसा करना उचित नहीं है। यहाँ एक बार कोई संत उनके पास ठहरे थे। उनसे मिलने वाले आए, उनके चरणों पर सिर रख कर लेट गए। महाराज कहने लगे कि सिंध में ''पीर पगाड़ा'' पर कभी भी पैर नहीं छूए जाते। मुसलमान पैर नहीं छूते। महाराज नहीं चाहते थे कि कोई बड़ा बने। जो कोई तारीफ करे, हम उस तरफ बह जाते हैं। यदि कोई स्पष्ट सुना दे, तो उसे पसन्द नहीं करते।
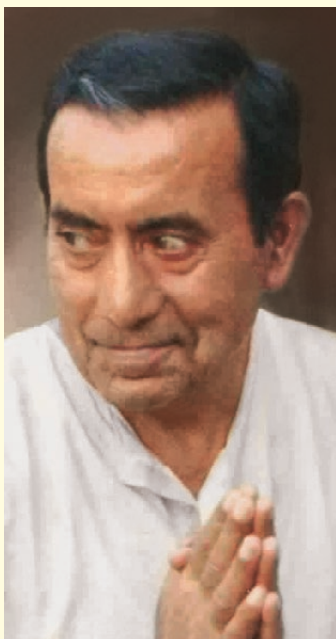
भक्ति में गिराने वाले वही होते हैं, जो ऊपर से आदर करते हैं, पर अन्त में गिरा देते हैं। महाराज ने कहा, मुझे नहीं मालूम कि पंजाब में भी ऐसे लोग हैं। यू. पी. में भी हैं। लोग परमेश्वर की साधना इसलिए करते थे कि परमेश्वर के सद्गुण प्राप्त हों। परन्तु इस समय दक्षिण में भी संत हैं, उनको परमेश्वर की तरह पूजा जाता है। महाराज कृष्णचन्द्र जी कहते हैं कि, जो देवी देवताओं की पूजा करते हैं, उनमें वह गुण आ जाते हैं, परन्तु वह परमेश्वर से दूर हो जाते हैं।'' एक बार जब हैदराबाद में आर्य समाज के लोग सत्याग्रह कर रहे थे, उस जेल में सत्याग्रही की मारपीट की जाती थी। एक बार वह बहुत घबराए, तो भगवान कृष्ण के दर्शन हुए और मारपीट उनके पहले ही खत्म हो गई, परन्तु उन्होंने महाराज से कहा, उनको अच्छा नहीं लगा।

जो मिले उसे स्वीकार कर, कुछ माँगे नहीं। कभी माँगना नहीं चाहिए और अहंकार नहीं आना चाहिए। जब आदमी को अहं आता है, तो फिर मन चंचल होता है और दुःखी होता है।

एक बार संत तुकाराम कीर्तन कर रहे थे, शिवाजी उनके पास गए। उन्हें वह अच्छे लगे, उन्होंने पालकी भेजी। तुकाराम परमेश्वर से रोने लगे। परमेश्वर तू क्यों मुझे दूर करता है ? पालकी मुझे नहीं चाहिए, मैं हमेशा पालकी नहीं चाहूँगा। परमेश्वर तू सब पर कृपा कर, कृपा कर, कृपा कर।

(साधना सत्संग, हरिद्वार, दिनांक 9-4-1971, प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 518–519)

प्रशंसा - साधक के लिए घातक (भाग 1)

विश्वामित्र

स्वामी जी महाराज अमृतवाणी में लिखते हैं:

राम राम भज कर श्री राम,
करिये नित्य ही उत्तम काम।

जितने कर्तव्य कर्म कलाप,
करिये राम राम कर जाप।

यों कहा जाए स्वामी जी महाराज ने अपनी सारी साधना पद्धति, इन्हीं चार पंक्तियों में उडेल दी है। स्वामी जी महाराज की दृष्टि में सर्वोच्च काम, सर्वोत्तम काम, राम नाम जपना है। हमारी दृष्टि अभी पूज्यपाद स्वामी जी महाराज जैसी नहीं। हमारी दृष्टि में राम नाम से कहीं अधिक महत्वशाली है नींद, भोजन, अपनी प्रशंसा सुननी, दूसरों को दुःख देना, व्यर्थ बातों में समय गंवाते रहना इत्यादि। इन सब बातों को हम अधिक महत्व देते हैं, राम नाम की उपासना से। यदि स्वामी जी महाराज की तरह हमारी दृष्टि भी इस प्रकार की हो :—

'राम राम भज कर श्री राम,
करिये नित्य ही उत्तम काम।'

वे कहते हैं यह उत्तम काम है। राम नाम जपना यह उत्तम काम है। यदि वास्तव में है तो फिर हमारी हालत मीरा जैसी होनी चाहिए,''दिवस न भूख, नींद नहीं रैना।'' उसकी दृष्टि में राम नाम का महत्व है। हम तो डट कर सोते हैं, डट के खाते हैं। इस बात की चिंता नहीं कि कम सोने की आवश्यकता है, कम खाने की आवश्यकता है ताकि अधिक भजन पाठ कर सकें, राम नाम की उपासना कर सकें। ऐसी हालत हमारी तो नहीं, मानो हमारी दृष्टि अभी पूज्य पाद स्वामी जी महाराज जैसी नहीं बनी। बन भी कैसे सकती है? हमारी दृष्टि अभी अनेक स्थानों पर है जो बहुत नगण्य हैं, जिनका जीवन में, विशेषतया परमार्थ में कोई महत्व नहीं। बल्कि वह हमारी कमाई को चूसने वाले हैं, हमारी दृष्टि तो उन स्थानों पर टिकी हुई है। आज आपकी सेवा में एक बहुत छोटी चीज़ की चर्चा करी जाएगी, शायद आपने जीवन में उसका बहुत महत्व जाना नहीं, पर हर कोई इस रोग से ग्रस्त है। छोटे से लेकर बड़े तक, सेवक से स्वामी तक, एक पापी पुरुष से लेकर महात्मा तक, बच्चे से बूढ़े तक, हर व्यक्ति इस रोग से ग्रस्त है। मानो यह चर्चा है विशेषतया साधकों के लिए पर सामान्य व्यक्ति भी इस चर्चा से लाभ ले सकते हैं। क्यों! यह रोग दुखदाई तो उनके लिए भी है। यह रोग आपको परमेश्वर के धाम तक तो पहुँचने नहीं देगा। जिस काम के लिए, यह मानव जीवन मिला हुआ है, उस काम को यह रोग पूरा नहीं होने देगा।

सन्तों, महात्माओं ने खोज करके एक साधक के जीवन की किसान के जीवन से तुलना करी है। क्या साम्य है, कहाँ एक किसान खेती—बाड़ी करने वाला और कहाँ एक साधक राम—नाम जपने वाला, संयमी जीवन बिताने वाला, अच्छे कर्म करने वाला, अपने ऊपर अंकुश रखने वाला। ऐसे व्यक्ति का साम्य एक किसान से कैसे हो सकता है, तुलना कैसे हो सकती है ? आइए देखें एक खेत का मालिक है किसान, धरती की छाती को हल के नुकीले भाग से चीरता है। छलनी—छलनी कर देता है, धरती माँ की छाती को नरम करने के लिए, कालान्तर में उसमें बीज बोना है, खाद डालनी है, वर्षा की प्रतीक्षा है या वैसे जल से सींचना है। ताकि जो बोया है वह उगे। यही बात है न साधारण शब्दों में, शानदार बीज, गला—सड़ा बीज नहीं। किसी अच्छे फार्म का बीज किसान लाकर बोता है, रोगी बीज नहीं—स्वस्थ बीज, अच्छा बीज, अच्छी quality का बीज लाकर

खेत में बोता है। अपनी ओर से प्रयत्न करता है, इसे बढ़िया से बढ़िया खाद दी जाए, जल भी दिया जाए और परमेश्वर की कृपा से उसका प्रकाश भी इसे प्राप्त हो, ताकि जो बोया है वह अनंत गुणा होकर मुझे प्राप्त हो। यही धारणा है न एक किसान की ? सकामी है, निष्कामी नहीं है।

कुछ करके जो बहुत कुछ पाना चाहता है उसे ही सकामी कहते हैं। परमेश्वर की ऐसी करनी जो बोआ है वह उगता है, धान कहिये, धान लगाया है उग रहा है। समस्या यहाँ खड़ी होती है। बेचारा किसान, जो कुछ भूमि में डाला है, वह तो उगेगा ही लेकिन उसके साथ साथ वह भी उगता है जो नहीं बोया हुआ। यदि यहाँ कोई किसान बैठे हुए हैं या कोई ऐसे व्यक्ति बैठे हैं, जिन्हें इस चीज़ में रुचि है तो वो मेरे साथ सहमत होंगे। किसान की बात न सही, घर की बात कीजियेगा। आपने अपने घर में कोई पौधा लगाया है। आप पानी भी देते हैं, खाद भी देते हैं, सब कुछ करते हैं उसे लेकिन आपको लगता है, यह पौधा सूख रहा है। कारण ढूंढते हैं, आपका कारण भी वही है जो उस किसान के साथ हो रहा है। क्यों उसके साथ–साथ जो नहीं बोया हुआ वह भी उग आया हुआ है, जिसे unwanted घास कहते हैं। एक समझदार किसान को उस घास को और जो असली पौधा है उन दोनों की पहचान है। पहचान बड़ी कठिन है, आरम्भ में दोनों में पहचान बड़ी कठिन है। साधक बेचारा, यहाँ मारा जाता है, उसे लगता है मैं आगे बढ़ रहा हूँ लेकिन उसके पांव खींचने वाली कोई चीज़ और बैठी है। वह उसके पांव पीछे खींच रही है, वह उसे आगे नहीं बढ़ने दे रही। unwanted घास उग आई है। एक किसान समझदार नुकीले खुरपे या हाथ से उस घास को निकालता है, यदि नहीं निकालता तो सारी की सारी शक्तियाँ जो वह दे रहा है, वह घास खींच कर ले जाती है और जो उपज होनी चाहिए, असली उपज होनी चाहिए, उससे वह वंचित रह जाता है। खाद इत्यादि जो कुछ भी उस पौधे को शक्ति दी जा रही है, वह शक्ति पौधे को न मिल कर के unwanted घास खींच लेती है। उसका विकास नहीं हो पाता या पौधा सूख जाता है, सड़ जाता है।

मान रुपी, अभिमान रुपी घास उग आई है। आप विवेक प्रयोग नहीं करते, यह घास तो बढ़ती जाएगी और आपका असली पौधा सूखता जाएगा।

एक साधक के साथ क्या साम्य है इसका, कैसी तुलना ! आप कोई सत्कर्म करना आरम्भ करते हैं। स्वामी जी महाराज ने कहा उत्तम काम 'राम–नाम' जपना आरम्भ करते हैं, सेवा करनी आरम्भ करते हैं, शुभ कर्म करना आरम्भ करते हैं, आप किसी को दुख नहीं देते, हम प्रयास करते हैं किसी को सुख पहुँचाया जाए। एक सत्कर्मी हो गये हैं आप। अब आप सत्कर्मी बन गये हैं तो स्पष्ट है कि प्रशंसा की वर्षा होकर रहेगी। कोई सेवा करने वाला, कोई सत्कर्म करने वाला चाहे या न चाहे, आप प्रशंसा चाहें या न चाहें, आप सत्कर्मी हैं किसी क्षेत्र में आप उतरे हैं आपको प्रशंसा मिल कर रहेगी। यह बालक अच्छा photographer है, यह चाहे कि मेरी प्रशंसा, मेरा गुणगान हो या न हो लेकिन अच्छा काम करेगा तो इसका गुणगान होकर रहेगा। कोई रोक नहीं सकता। इसकी recognition होकर रहेगी, कोई रोक नहीं सकता। प्रशंसा रुपी वर्षा होकर रहेगी, तो अभिमान रुपी घास उग कर रहेगी। यदि यह अनिवार्य है तो यह भी अनिवार्य है यह बालक इसमें अधिक काम करने का प्रोत्साहन आएगा। क्यों? जितना अधिक काम करेगा उतनी अधिक प्रशंसा मिलेगी। इसके अन्दर उत्कृष्टता का भाव आएगा। मैं औरों से बढ़िया हो गया, इन्हीं को अभिमान के चिन्ह कहा जाता है।

अभिमान की घास न चाहते हुए भी, इस बालक के अन्दर उग आई है। यदि विवेक का प्रयोग नहीं करता, किसी की सहायता नहीं लेता, तो लौकिक

दृष्टि से, पारमार्थिक दृष्टि से, यह बीच ही बीच खोखला हो रहा है। किसी काम का नहीं है क्योंकि इसको रोग इस प्रकार का लग गया है, जो भीतर ही भीतर खा जाएगा। मान रुपी, अभिमान रुपी घास उग आई है। आप विवेक प्रयोग नहीं करते, यह घास तो बढ़ती जाएगी और आपका असली पौधा सूखता जाएगा। क्यों ? उसके लिए तो कोई शक्ति है ही नहीं। ध्यान रहे यह रोग किनको लगता है? वह जो राम नाम जपने वाले हैं, सत्कर्मी हैं, सेवा के क्षेत्र में उतर गये हैं। आम व्यक्ति को तो पता ही नहीं। सेवा करने वाले को यह रोग लगता है, सत्कर्म करने वाले को यह रोग लगता है, आगे बढ़ने वाले को यह रोग लगता है, बुद्धिजीवी को यह रोग लगता है, जो थोड़ा ऊपर चढ़ गया हुआ है, वह इस रोग से अधिक ग्रस्त होता है।

'पता भी लगना चाहिए कि घास उगी है और काटने वाला भी कोई मिलना चाहिए, जिसे जानकारी हो, पहचानने वाला हो कहीं वो असली पौधा ही न काट दे, उसे पहचान होनी चाहिए कि यह घास है या यह असली पौधा है, उससे घास कटवाईयेगा।'

अभिमान रुपी, मानरुपी, मद्‌रुपी, मोहरुपी घास, निर्भर करता है आपने बीज भक्ति का बोया है, आपने बीज कर्म का बोया है या आपने बीज ज्ञान का बोया है तद्‌अनुसार मद्, मान, या मोह रुपी घास उगती है। इस घास को यदि आप नहीं काटेंगे तो किसी काम के नहीं रहेंगे। इस घास को स्वयं काटिएगा या किसी से कटवाईएगा। दो बातें : 'पता भी लगना चाहिए कि घास उगी है और काटने वाला भी कोई मिलना चाहिए, जिसे जानकारी हो, पहचानने वाला हो, कहीं वो असली पौधा ही न काट दे, उसे पहचान होनी चाहिए कि यह घास है या यह असली पौधा है, उससे घास कटवाईयेगा।'

भक्तजनो ! प्रशंसा की बात, इसकी gravity को यदि आप आज तक नहीं जान सके हैं तो एक छोटे से दृष्टांत के माध्यम से देखें। पहले आप अपनी अपनी छाती पर हाथ रख के देखो कौन ऐसा यहाँ बैठा हुआ जो इस रोग से ग्रस्त नहीं है। हालत और बिगड़ जाती है जब प्रशंसा आती है तो आप चाहते हैं कि और अधिक आए क्योंकि इससे भूख नहीं मिटती, पेट तो इससे भरता ही नहीं है। हमारे अधिक मित्र कौन हैं, जो हमारी प्रशंसा करने वाले हैं। उनको टेलीफोन करके बुलाते हैं, आज आ जाना, lunch भी यहीं पर ले लेना, day spend करना हमारे साथ, क्यों ? वह मूर्ख आकर आपका नुकसान करता है। खाना भी आपका खाता है और आपका भीतर भी जो है वह भी वो खाता है; जिसकी आपको अभी समझ नहीं आ रही है। हर प्रकार से खोखला करने वाले ऐसे लोगों को चापलूस कहा जाता है। सन्त महात्मा कहते हैं इनके भीतर झाँक कर देखो वह महास्वार्थी हुआ करते हैं, वह आपके मित्र नहीं, आपके भीतर से कट्टर शत्रु हैं, दुश्मन हैं, साधक के लिए। बचो इनसे। सबसे अधिक बचने की आवश्यकता मुझे, जिसके चारों ओर ऐसे लोग घूमते हैं। मेरे जैसे कोई और भी हैं, उनको भी बचने की आवश्यकता। क्यों ? प्रशंसा से पेट नहीं भरता। जन्म–जन्मान्तर भी आपके, ये सारे बैठे हुए, सारे के सारे भी आपकी प्रशंसा करें तो आप सोचें कि इनकी प्रशंसा सुन कर आपका पेट भर जाएगा तो यह बात सम्भव नहीं है।

एक बड़ी प्रसिद्ध कथा है। आप जानते हैं अर्जुन को अपने गाण्डीव धनुष से बड़ा प्रेम था। उसने कसम खाई थी, मेरे गाण्डीव की यदि भूल से भी कभी कोई बदनामी, अपमान करेगा तो मैं उसके प्राण हर लूँगा। महाभारत में ऐसा वर्णन आता है। आज उनके अतीव माननीय, सम्माननीय भाई युधिष्ठर से अपमान हो गया। धिक्कार है तेरे गाण्डीव पर, ऐसे शब्द युधिष्ठर के मुख से निकले। मेरे प्रण के अनुसार युधिष्ठर को मरना है और मैं इसे मार कर रहूँगा। भगवान् श्री कृष्ण के पास गया, "महाराज आपको पता है क्या

घटना घटी है? प्रण के अनुसार मैंने इस युधिष्ठर के बच्चे को आज मार के रहना है। इसने मेरे गाण्डीव का अपमान किया है, गाली निकाली है"। भगवान् श्री कृष्ण अर्जुन को कहते हैं, "पार्थ ! व्यक्ति को मारने के लिए तलवार एवं बन्दूक ही नहीं चाहिए, मैं तुझे अनोखा ढ़ँग बताता हूँ। मैंने इसका श्री गीता जी में भी वर्णन किया है"। बताएं महाराज। युधिष्ठर मरेगा भी नहीं और बचेगा भी नहीं। भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं, "पार्थ ! किसी सम्माननीय व्यक्ति का भरी सभा में अपमान कर दिया जाए, तो वह मर जाता है। जा दरबार में जाकर युधिष्ठर के सामने खड़े हो कर, सबके सामने उसका अपमान कर दे, वह जीते जी मर जाएगा, तुझे तलवार या बन्दूक की जरुरत नहीं पड़ेगी, धनुष वाण की तुझे जरुरत नहीं पड़ेगी"। अर्जुन ने ऐसा ही किया, युधिष्ठर अति लज्जित। अर्जुन भक्त है उसे भगवान् का सान्निध्य इतनी देर तक प्राप्त रहा है, स्नेह इतनी देर तक प्राप्त रहा है। उसे अच्छा नहीं लगा, ऐसा प्रण मुझे नहीं करना चाहिए था। क्या रखा है ऐसे प्रण में मैंने भरी सभा में अपने बड़े भाई को बेइज्जत कर दिया। यह बात ठीक नहीं है। आज पुनः भगवान् श्री कृष्ण के पास चले गये। महाराज यह आप ने मुझे क्या उपाय बता दिया, इससे अच्छा होता मैं ही मर जाता। भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं, "कोई बात नहीं तू मरना चाहता है, तो तुझे भी मार देते हैं"। आज एक अनोखी बात भगवान् श्री कृष्ण बता रहे हैं। हमने इन बातों पर कभी ध्यान नहीं दिया। "पार्थ ! एक शब्द है आत्मश्लाघा, अपनी प्रशंसा करने वाला, अपनी प्रशंसा सुनने वाला भी जीते जी मर जाता है। जा किसी के सामने जा कर अपने गुणगान कर दे या अपना गुणगान अच्छी तरह से बीच में बैठ कर उनसे सुन ले तो तू भी जीते जी ही मर जाएगा"।

(श्री महाराज जी का यह लेख मूलतः 'साधना समन्वय पथ', सितम्बर 2001, में प्रकाशित हुआ था। इस का दूसरा भाग अगले अंक में पढ़िए।)

बच्चों के लिए
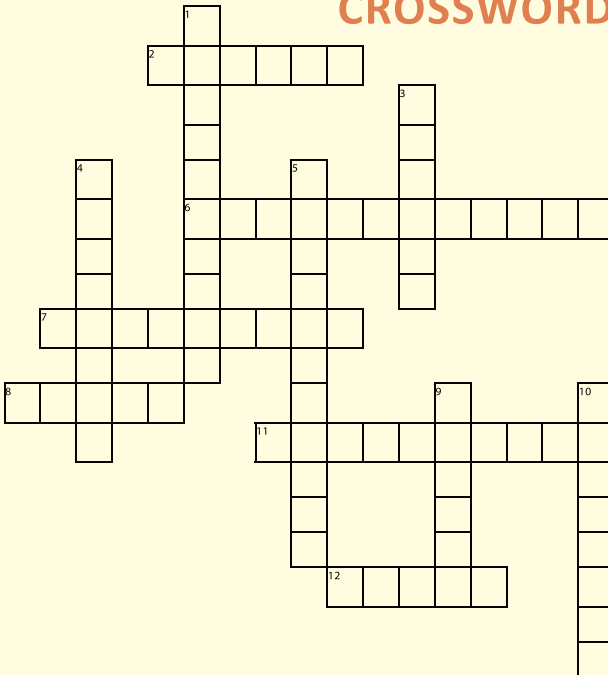
Across

2. Name of the mother of Dhruv
6. Name of the place where Nishad Raj used to stay
7. Name of Ravan's younger brother who was a devotee of Shree Ram
8. Who is known as Videh Raj
11. Name of Ravan's sister
12. Who was the son of Bali?

Down

1. Who is also known as Dharmraj?
3. Name of the Rishi Putra who was killed by Dasharath
4. Name of mother of Mata Sita
5. Name of Prahlad's father
9. Name of Hanuman Ji's mother
10. Name of the Kul-Guru of Lord Rama

Answer Down : 1 Yudhishter 3. Shravan 4. Sunaina 5. Hirnakshipu 9. Anjana 10. Vashisht

Across : 2. Suniti 6. Shringverpur 7. Vibhishan 8 Janak 11. Shrupnakha 12. Angad

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

जनवरी से मार्च 2018

साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- सुजानपुर, पंजाब में 23 व 24 दिसम्बर को दो दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 134 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- देवास, मध्यप्रदेश में 25 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 139 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- लुधियाना, पंजाब में 31 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 76 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- होशियारपुर, पंजाब में 31 दिसम्बर को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 31 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- दाहोद, गुजरात में 31 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 2841 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- पेटलावाद, मध्यप्रदेश में 1 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 5457 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- थांदला, मध्यप्रदेश में 2 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 1107 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- कूपड़ा, बांसवाड़ा राजस्थान में, 3 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 3220 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- परतापुर, बांसवाड़ा राजस्थान में, 4 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 2373 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- कुशलगढ़, राजस्थान में, 5 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 2727 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- सेमरोड बोलासा (झाबुआ), मध्यप्रदेश में 6 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 4418 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- झाबुआ, मध्यप्रदेश में 7 से 9 जनवरी तक खुला सत्संग लगा जिसमें 7 जनवरी को 8079 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- इन्दौर, मध्यप्रदेश में 12 से 15 जनवरी तक तीन रात्री साधना सत्संग लगा जिसमें 12 जनवरी को 315 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- बीकानेर, राजस्थान में 17 जनवरी को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 30 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- इटारसी, मध्यप्रदेश में 20 से 21 जनवरी को श्री रामायण जी का अखंड पाठ हुआ। 21 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 770 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- फरीदाबाद, हरियाणा को 26 जनवरी विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 89 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

नामरुप, आसाम में 10 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 64 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- पीलीबंगा, राजस्थान में 27 व 28 जनवरी को दो दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 79 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- रोहतक, हरियाणा को 28 जनवरी विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 346 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- हांसी, हरियाणा में 2 से 5 फरवरी तक तीन रात्री साधना सत्संग लगा जिसमें 114 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- तिनसुकिया, आसाम में 11 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 30 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- बांसगहन, मध्यप्रदेश में 13 से 22 फरवरी तक नौ दिवसीय अखंड जाप (जप यज्ञ) की पूर्ति के उपरान्त विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 775 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश में 23 से 25 फरवरी तक खुला सत्संग लगा जिसमें 98 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- रतनगढ़, राजस्थान में 26 से 27 फरवरी तक खुला सत्संग लगा जिसमें 936 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- दिल्ली, में 28 फरवरी से 2 मार्च तक होली पर खुला सत्संग लगा जिसमें 957 साधक सम्मिलित हुए। श्री रामशरणम् में जनवरी एवं फरवरी में साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् 86 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- जालंधर, पंजाब 4 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 139 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- आदिवासी गांव बांसगहन (अब्दुल्लागंज) नज़दीक भोपाल, मध्य प्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है। मार्च 2018 में छत (लैंटर) पड़ जाने की सम्भावना है।
- अमरपाटन, मध्य प्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का नक्शा बन गया है और निर्माण कार्य शीघ्र आरम्भ हो जाएगा।

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज सम्बन्धित एक साधक के अनुभव

स्वामी जी का आत्मकथन :

''जब सत्यानन्द शरीर छोड़ेगा, बैंक में एक पैसा, ज़मीन का एक भी टुकड़ा या चढ़ावे का एक भी बादाम उसके पास नहीं मिलेगा।''

स्वामी जी का जब भी आगमन होता, दिल्ली में बंगलो रोड पर ठहरते। कभी बारहखंबा रोड भी। एकदा प्रेमपूर्वक कहते, 'तू रोज आ जाता है'। मैंने मुस्करा कर कहा, अच्छा, मैं एक दिन छोड़ कर आ जाआ करूँ? बंगलो रोड निवास पर जब केवल मैं ही उनकी उपस्थिति में था तो बोले, ''मैं कुछ जानने वालों के लिए रोज प्रार्थना करता हूँ। अगर तुम चाहो तो मैं तुमको उस माला का मनका बना लूँ।'' खड़े हो गए। भरपूर प्रेम से गले लगा लिया। उनसे दैवी सुगन्ध का अनुभव किया। जरा भी देर न लगी। एक अबल तो सबल हो गया। जैसे एक दीन–हीन को स्वयं शासक ने अपना बना लिया। अधिकारी न होते हुए भी परम कृपा का पात्र हो गया।

स्वामी जी की आयु 90 से ऊपर होते हुए भी उनका व्यक्तिगत कार्यक्रम और दिनचर्या व्यस्त होती। मिलने वाले अपनी समस्याओं के समाधान करवाने आते रहते। सेवा तो भक्ति का अंग है इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण थे स्वामी जी। मैंने स्वयं अनुभव किया कि कोई अज्ञानवश वार्तालाप करता तो स्वामी जी का उत्तर सहज सरल और हितकारक होता। उनसे मिलने के बाद कोई अपने आपको छोटा नहीं समझता बल्कि प्रतिष्ठित और सम्मानित ही अनुभव करता। मैं तो स्वयं एक बालक की मूर्खता करता। वह तो प्रेम के ही सागर बने रहते। मैंने स्वामी जी से श्री अधिष्ठान जी की माँग की तो उन्होंने कहा, ''प्रेम जी से ले लो''। नहीं मिला तो मैंने स्वामी जी से फिर कहा। है न मूर्खता ! स्वामी जी ने मुस्कुरा कर पिता की तरह कहा,''एक बार दुबारा माँग लो।' माँगा तो फिर मिल गया।

गीता के आर्दश पुरुष का व्यक्तित्व उनमें पूर्ण रुप से प्रमाणित था।

ऐसे बहुत साधक सम्पर्क में आए जिनसे जानकारी प्राप्त हुई कि असहाय रोग से पीड़ित निरोग हो गए। असम्भव प्रतीत होने वाले कार्य सहज से हो गए। स्वामी जी की संकल्प शक्ति इतनी प्रबल थी कि जिस कार्य को उचित समझते वह हो जाता। सफल मनोरथ और सिद्ध काम महात्मा थे। विरले महात्मा थे!

(इन्होंने 14 वर्ष की आयु में स्वामी जी से दीक्षा ली थी और 1960 में स्वामी जी की जल समाधि की अन्तिम यात्रा में सम्मिलित हुए थे।)

'गुरु शरीर नहीं है। गुरु तत्व है।
जो देश काल से भी परे है।'

अमृतवाणी का नित्य गाना, राम राम मन बीच रमाना।
देता संकट विपद् निवार, करता शुभ श्री मंगलाचार।

प्रत्यक्ष एवं प्रमाणित दिनांक 2-1-2018 को घर से 150 कि.मी. दूर किसी मीटिंग के लिए सुबह लगभग 9 बजे मैं रवाना हुआ। पत्नी एवं ढाई वर्ष का बच्चा भी साथ था। अचानक 11 बजे हाईवे पर गाड़ी के सामने कुछ भेड़ बकरियाँ आ गई। ड्राईवर के तुरन्त ब्रेक लगाने से 100 की स्पीड में चल रही गाड़ी का बैलेंस बिगड़ गया। दायाँ टायर भी फट गया और चार पलटी मारने के बाद गाड़ी लगभग 20 फीट दूर ढलान की तरफ चली गई। उस समय जादुई राम का मुख से उच्च स्वर में जाप शुरु हो चुका था। मौत बहुत नज़दीक थी और सहारा केवल राम नाम और केवल वही सहारा उस समय मौत को डराने में सक्षम था।

उस राम नाम के तीव्र स्वर के इलावा बहुत कुछ स्मरण नहीं है। बस ऐसा लगा जैसे हमें किसी दिव्य पुरुष ने उस समय अपने आवरण में सुरक्षित लपेट रखा हो। अंत में एक आश्रम के बाहर लगे handpump के support से गाड़ी रुकी। वहाँ के संत सामने

(अगले पृष्ट पर जारी)

खड़े थे। उन्होंने कहा,''आज पूर्णिमा है आपके गुरु ने आप सबको नया जीवन बख़्शा है।'' सब कुछ अद्भुत। ड्राइवर, बॉडीगार्ड, मैं, मेरी पत्नी एवं बच्चा सब सुरक्षित थे। किसी को खरोंच तक नहीं। पूरे दृश्य में पूज्य श्री महाराज जी के श्री मुख से निकले हुए शब्द अक्षरशः प्रमाणित हो गए।

1. ये दिव्य पुरुष (गुरुजन) शरीर में न होते हुए भी सूक्ष्म रुप में हमारी सहायता करते हैं।

2. शरीर से स्वतन्त्र हो कर अर्थात भौतिक चोला छोड़ कर दिव्य संत असीम हो जाते हैं।

3. गुरु शरीर नहीं है। गुरु तत्व है। जो देश काल से भी परे है। जिसको स्वामी जी महाराज ने,''परम गुरु जय जय राम' गाया है।

एक्सीडेंट से ठीक पहले यह भजन गाड़ी में बज रहा था,''न खाने की, न पीने की, न मरने की, न जीने की, मेरे स्वामी को रहती है मेरी हर बात की चिन्ता। हमारे हैं श्री गुरुदेव हमें किस बात की चिन्ता।''

परम पूज्य गुरुजन, वह शहनशाह नाम (राम) एवं उनकी सभी दिव्य संतान श्री रामशरणम् परिवार के एक एक साधक को मेरा वंदन जिनकी शुभ कामनाओं, आशीष एवं आशीर्वाद से नया बोनस जीवन पा कर पुनः नए उत्साह के साथ हाज़िर हूँ।

राम राम कृतज्ञ हो, करे सुधन्य पुकार। उसके द्वार कुटीर पर मैं दूँ तन सिर वार।

गुरुजनों की इस अद्भुत लीला को उनका यंत्र बन कर प्रेरणा एवं अनन्य विश्वास हेतु लिखा है। ■

Sadhna Satsang (April 2018 to September 2018)		
Haridwar	27 March to 1 April	Tuesday to Sunday
Haridwar	30 June to 3 July	Saturday to Tuesday
Haridwar	22 to 27 July	Sunday to Friday
Haridwar	30 Sept. to 3rd Oct.	Sunday to Wednesday

Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam, Delhi (April 2018 to September 2018)		
15 April	Sunday	10:30 AM
27 May	Sunday	10:30 AM
27 July	Friday	4 .00 PM
26 August	Sunday	10:30 AM
23 September	Sunday	10:30 AM

Open Satsang (April 2018 to September 2018)		
Mandi(HP)	01-Apr	Sunday
Jawali(HP)	14-Apr	Saturday
Bhareri(HP)	15-Apr	Sunday
Alampur(HP)	18-Apr	Wednesday
Manali(HP)	14 to 16 June	Thursday to Saturday
Saylorsburg (USA)	28 to 30 June	Thursday to Saturday
Delhi	28 to 29 July	Saturday to Sunday
Rohtak (Haryana)	11 to 12 August	Saturday to Sunday
Rewari (Haryana)	15 to 16 September	Saturday to Sunday
Jammu	21 to 23 September	Friday to Sunday
Sydney (Australia)	29 to 30 September	Saturday to Sunday

Naam Deeksha in Other Centres (April 2018 to September 2018)		
01-Apr	Sunday	Mandi (HP)
14-Apr	Saturday	Jawali (HP)
15-Apr	Sunday	Bhareri (HP)
18-Apr	Wednesday	Alampur (HP)
06-May	Sunday	Bichpur (Agra)
26-May	Saturday	Shukartaal (UP)
27-May	Sunday	Chambhi (HP)
09-Jun	Saturday	Kishatwar (J&K)
10-Jun	Sunday	Bhadarwah (J& K)
16-Jun	Saturday	Manali (HP)
30-Jun	Saturday	Saylorsburg (USA)
12-Aug	Sunday	Rohtak (Haryana)
14-Sep	Friday	Hiranagar (J&K)
16-Sep	Sunday	Rewari (Haryana)
23-Sep	Sunday	Jammu
30-Sep	Sunday	Sydney (Australia)

Purnima (April 2018 to September 2018)	
30 April	Monday
29 May	Tuesday
28 June	Thursday
27 July	Friday
26 August	Sunday
25 September	Tuesday

INVITATION TO ALL CHILDREN

All children of Shree Ram Sharnam are invited to make cards for Guru Purnima and submit them by 31st May, 2018. The best three cards will be published in the July edition of *Satya Sahitya*.

Please note the following:

1. Please make your card on one page only.
2. Please do not write your name on the card since names will not be published.
3. Please write your name and address at the back of the card.
4. Please note that cards will not be returned.
5. All entries will be reviewed.
6. Please either WhatsApp your card to the following phone number +91-8360782802 or post it to Shree Ram Sharnam, 8A, Ring Road, Lajpat Nagar- IV, New Delhi- 110024, India, inscribing at the top 'Card Only'.
7. If sending by WhatsApp, please take a picture of your card without flash and in proper lighting, so that the picture quality is good.

We look forward to receiving your cards.

सभी केन्द्रों से प्रार्थना

श्री रामशरणम् की वेब साईट (website) को हम अपडेट कर रहे हैं। जहाँ पर भी नियमित सत्संग होते हैं कृपया निम्नलिखित जानकारी दें।

1. शहर का नाम
2. जहाँ सत्संग होता है वहाँ का पूरा पता।
3. सत्संग का समय
4. सम्पर्क व्यक्ति का नाम, फोन नं. एवं ई–मेल आई.डी. (e-mail id).

जिस स्थान का विवरण वेब साईट पर पहले से है कृपया उसे चैक करें और अगर कोई बदलाव है तो श्री रामशरणम्, दिल्ली को सूचित करें।

आप shreeramsharnam@yahoo.co.in और satsanglist@gmail.com पर अपनी सूचना भेज सकते हैं।

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924